International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-07-2022, Accepted: 09-08-2022, Published: 24-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 81-86

डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक सुझावों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

अंजनी सक्सेना[1], सैयदा सारा अजीज[2]

[1] शोध छात्रा, सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स), नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स), नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं परमाणु वैज्ञानिक के नाम से सुविख्यात डा. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने न सिर्फ विज्ञान जगत को नई दिशा दी बल्कि शिक्षा को सामाजिक समस्याओं की ओर उन्मुख किया। डा. अब्दुल कलाम की जीवन–शैली, मानवतावादी एवं स्वप्नदर्शी दृष्टिकोण तथा उनकी मूर्त धारणाओं तथा बच्चों के साथ उनके संस्मरणों का उल्लेख सर्वविदित है। डा. कलाम द्वारा शिक्षा में सुधार से आदर्श नागरिकों के निर्माण का प्रयास किया था जिससे एक खुशहाल, समृद्ध एवं शक्तिसंपन्न राष्ट्र की आधारशिला रखी जा सके। डा. कलाम ने अपनी शिक्षा विचारों में शिक्षकों तथा शिक्षार्थी को ज्ञान का झरोखा माना तथा शिक्षकों के गुणी होने पर विशष बल दिया। शिक्षा सुधार में अपने विचारों से प्राणदान देने वाले डा. कलाम के नाम का उल्लेख शिक्षा सुधारकों में नहीं शामिल किया गया। यद्यपि प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के पूर्व उनके विचारों को व्यक्त करने वाले अनेक शोधग्रंथ लिखे गये हैं, किन्तु उक्त शोध ग्रन्थों की सीमा से बाहर उनके शैक्षिक चिन्तन, शिक्षा सुधारों की विपुल शोध सामग्री उपेक्षित पड़ी थी जिसका अध्ययन विश्लेषण और विवेचन शोध सापेक्ष था। डा. कलाम ने अपनी विचारों द्वारा छात्र की विभिन्न क्षमताओं के विकास एवं उनके मध्य एकीकरण को बल देते हुए राष्ट्र निर्माण एवं आर्थिक विकास को महत्वपूर्ण बताया और छात्र की विभिन्न क्षमताओं को उचित रूप में विकसित करके उनके मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित करने का विचार प्रस्तुत किया। उनका दृढ़ मत था कि शिक्षा प्रणाली को प्रमुख रूप से छात्रों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति एवं आध्यात्मिक समझ को विकसित करना चाहिए।

डा. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य, भौतिक और आध्यात्मिक विकास के साथ–साथ ऐसे आदर्श नागरिकों का सृजन करना है, जो खुशहाल, समृद्ध, शक्तिसंपन्न राष्ट्र का निर्माण कर सके। डा. कलाम के अनुसार शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो देश के युवाओं और बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाए और ऐसा तभी संभव है जब वह सृजनात्मक हो एवं रोजगारों का निर्माण करने वाली हो। डा. कलाम के सुझावों एवं विचारों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में क्रियान्वित करने पर भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आई विसंगतियों एवं चुनौतियों को दूर करने में सहायक कारक सिद्ध हो सकते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में डा0 कलाम के शैक्षिक व राष्ट्रवादी कार्यों के सम्बन्ध में बारीक अध्ययन करते हुए, उनके महत्वपूर्ण प्रभावों को मूर्त रूप देने, शैक्षिक डा. अब्दुल कलाम के सुझावों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कर उसे जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करने का एक प्रयास किया है।

मूल शब्दः डा. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम, विजन 2020 विकसित भारत, भारतीय शिक्षा प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, एन.सी.ई.आर.टी नेशनल कैरिकुलम फ्रेमवर्क 2005

प्रस्तावना

शिक्षा का विकास वैदिक काल से चला आ रहा है जो लगभग 2500 ईसा पूर्व से शुरू हुआ है, उस समय वैदिक शिक्षा, बौद्धकालीन शिक्षा, मुगलकालीन शिक्षा, गुरूकुल शिक्षा, तक्षशिला, मध्यकालीन शिक्षा, ब्रिटिश कालीन शिक्षा क्रमागत रूप से बढ़ता चला आ रहा है। शिक्षा के विकास में समय–समय पर भारतीय शिक्षा नीति 1946 में विभिन्न बदलाव किये हैं जिनमें पाठ्यक्रम मूल्यांकन, पाठ्यक्रम निर्माण इत्यादि है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं परमाणु वैज्ञानिक के नाम से सुविख्यात डा. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने न सिर्फ विज्ञान जगत को नई दिशा दी बल्कि शिक्षा को सामाजिक समस्याओं की ओर उन्मुख किया। डा. अब्दुल कलाम की जीवन–शैली, मानवतावादी एवं स्वप्नदर्शी दृष्टिकोण तथा उनकी मूर्त धारणाओं तथा बच्चों के साथ उनके संस्मरणों का उल्लेख सर्वविदित है। सीधे–सादे व्यक्तित्व वाले राष्ट्रपति डा. कलाम दृढ़ निश्चयी थे तथा बड़े से बड़ा निर्णय लेने में सबसे पहले मानवीय संवेदना को महत्व देते थे। डा. कलाम द्वारा शिक्षा में सुधार से आदर्श नागरिकों के निर्माण का प्रयास किया था जिससे एक खुशहाल, समृद्ध एवं शक्तिसंपन्न राष्ट्र की आधारशिला रखी जा सके। डा. कलाम ने अपनी शिक्षा विचारों में शिक्षकों तथा शिक्षार्थी को ज्ञान का झरोखा माना तथा शिक्षकों के गुणी होने पर विशष बल दिया। शिक्षा सुधार में अपने विचारों से प्राणदान देने वाले डा. कलाम के नाम का उल्लेख शिक्षा सुधारकों में नहीं शामिल किया गया। यद्यपि प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के पूर्व उनके विचारों को व्यक्त करने वाले अनेक शोधग्रंथ लिखे गये हैं, किन्तु उक्त शोध ग्रन्थों की सीमा से बाहर उनके शैक्षिक चिन्तन, शिक्षा सुधारों की विपुल शोध सामग्री उपेक्षित पड़ी थी जिसका अध्ययन विश्लेषण और विवेचन शोध सापेक्ष था। डा. कलाम ने अपनी विचारों द्वारा छात्र की विभिन्न क्षमताओं के विकास एवं उनके मध्य एकीकरण को बल देते हुए राष्ट्र निर्माण एवं आर्थिक विकास को महत्वपूर्ण बताया और छात्र की विभिन्न क्षमताओं को

उचित रूप में विकसित करके उनके मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित करने का विचार प्रस्तुत किया। उनका दृढ़ मत था कि शिक्षा प्रणाली को प्रमुख रूप से छात्रों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति एवं आध्यात्मिक समझ को विकसित करना चाहिए।

डा. कलाम द्वारा अनुभूत शैक्षिक विकास अत्यंत व्यापक, दूरगामी, भारतीय ज्ञान परिप्रेक्ष्य से संपृक्त और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की समृद्ध आधारशिला पर स्थापित है। डा. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य, भौतिक और आध्यात्मिक विकास के साथ–साथ ऐसे आदर्श नागरिकों का सृजन करना है, जो खुशहाल, समृद्ध, शक्तिसंपन्न राष्ट्र का निर्माण कर सके। डा. कलाम के अनुसार शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो देश के युवाओं और बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाए और ऐसा तभी संभव है जब वह सृजनात्मक हो एवं रोजगारों का निर्माण करने वाली हो। डा. कलाम के सुझावों एवं विचारों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में क्रियान्वित करने पर भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आई विसंगतियों एवं चुनौतियों को दूर करने में सहायक कारक सिद्ध हो सकते हैं। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में डा0 कलाम के शैक्षिक व राष्ट्रवादी कार्यों के प्रभावों को मूर्त रूप देने तथा जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करने का एक छोटा प्रयास किया है।

डा0 कलाम के अनुसार निर्धारित शिक्षा के उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में क्रमाबद्ध किया गया है–

छात्रों की अंतर्निहित सृजनात्मक क्षमता का विकास– डा. कलाम के अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य छात्र की अंतर्निहित क्षमता और गुणों का उच्चतम विकास करना है। छात्र में अंतर्निहित क्षमताओं और योग्यताओं का प्रकटीकरण ही सच्ची शिक्षा है।

आध्यात्मिक आधार पर वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास

महान वैज्ञानिक डा0 कलाम का मानना है कि छात्रों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास किया जाना चाहिए परंतु उसके मूल में अध्यात्म का सार होना चाहिए। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति करने का अर्थ यह नहीं है कि हम आध्यात्मिक विकास को रोक दें। हमें अपनी आंतरिक ताकत के आधार पर विकास का अपना मॉडल इसी भूमि पर तैयार करना होगा। हमारी आध्यात्मिक समझ ही हमारी ताकत है। युग की सबसे बड़ी बीमारी है– कोरा वैज्ञानिक होना, आध्यात्मिक न होना। व्यक्ति की इसी प्रवृत्ति ने बहुत सारी बीमारियों को जन्म दिया है। जीवन विज्ञान का मुख्य सूत्र है– आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण, न कोरा वैज्ञानिक, न कोरा आध्यात्मिक।

विभिन्न क्षमताओं का विकास एवं एकीकरण

डा. कलाम के अनुसार शिक्षा के द्वारा छात्र की विभिन्न क्षमताओं का विकास एवं उनके मध्य एकीकरण किया जाना चाहिए। उनका मानना है कि राष्ट्र निर्माण और आर्थिक विकास का कार्य तभी भली–भाँति किया जा सकता है जब छात्र की विभिन्न क्षमताओं को उचित रूप में विकसित करके उनके मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित किया जाए। उन्होंने मुख्तः तीन क्षमताओं को बताया–

1. अनुसंधान और अन्वेषण क्षमता।
2. उद्यमकर्ता के लिए नेतृत्व क्षमता।
3. सृजनात्मक और अभिवन परिवर्तन क्षमता।

अदम्य साहस का विकास

डा0 कलाम के अनुसर शिक्षा के द्वार छात्रों में अदम्य साहस उत्पन होना चाहिए। उन्होंने अदम्य साहस से युक्त प्रज्जवलित युवा के मस्तिष्क को देश का प्रबल संसाधन बताया। धरती के ऊपर, आकाश में तथा जल के नीचे छिपे किसी भी संसाधन से यह युवा कहीं अधिक शक्तिशाली है तथा शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य ऐसे अदम्य साहस से युक्त युवाओं का निर्माण करना होना चाहिए।

बाधाओं पर विजय पाने की क्षमता का विकास

डा0 कलाम के अनुसर छात्रों को इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए कि वो मार्ग में आने वाली बाधाओं का धैर्य के साथ सामना कर सकें और खुशहाल और समृद्ध जीवन जी सके। उनके अनुसार कोई व्यक्ति किसी मिशन पर कार्य करता है तो उसके मार्ग में बाधाओं का आना स्वाभाविक ही है परन्तु उसे चाहिए कि वह अपने मार्ग की उन बाधाओं को दूर करे, उन्हें परास्त करे एवं सफलता अर्जित करे।

नैतिक शिक्षा एवं मानवीय मूल्यों का विकास

शिक्षा के उद्देश्यों के रूप में मूल्य आधारित शिक्षा की महत्ता को डा0 कलाम ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है– ''बच्चों को स्कूल में और घर पर मूल्य आधारित शिक्षा देने की जरूरत है, ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें। स्कूल का समय पढ़ाई के लिए सबसे अच्छा समय है। बच्चों को प्रेरक आदर्श वातावरण मिलना चाहिए, जहां उन्हें लक्ष्य आधारित शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा भी मिले। यदि छात्र मूल्य आधारित शिक्षा विद्यालय में प्राप्त नहीं कर पाता है तो कोई भी सरकार आदर्श समाज की स्थापना नहीं कर सकती। यदि छात्र अपने अध्ययनकाल में नैतिक शिक्षा से वंचित रह जाता है तो राष्ट्र एक प्रबुद्ध नागरिक खो देता है।''

आजीवन स्वतंत्र शिक्षार्थी के रूप में ढालना

डा0 कलाम के अनुसर ''शिक्षा का उद्देश्य युवाओं को कुछ इस प्रकार से ढालना है कि वे आजीवन स्वतंत्र शिक्षार्थी बने रहें।'' डा0 कलाम कहते हैं कि शिक्षा प्रक्रिया का लक्ष्य, छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करना तथा उनमें रचनात्मकता के द्वीप प्रज्जवलित करना होना चाहिए, जिससे कि युवा अपने संपूर्ण जीवन में एक स्वतंत्र शिक्षार्थीबने रहें। उनके अनुसार शिक्षार्थियों में सीखने की प्रक्रिया स्थाई रूप से आरोपित हो जानी चाहिए क्योंकि यह सीखने की प्रक्रिया हमारे देश का सतत विकास करेगी इसी के द्वारा नए विचारों और प्रवृत्तियों को ग्रहण किया जाएगा, जो भावी क्रियाओं को जन्म देगी।

राष्ट्र विकास के लिए आदर्श नागरिकों का निर्माण
डा0 कलाम, शिक्षा को विकसित, समृद्ध एवं शक्तिसंपन्न राष्ट्र की आधारशिला मानते हैं। डा0 कलाम कहते हैं कि शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा ऐसे आदर्श नागरिकों का निर्माण किया जाना चाहिए, जो उसे समृद्ध और शक्तिसंपन्न राष्ट्र के रूप में परिवर्तित कर सके। उनके अनुसार इन आदर्श नागरिकों में उच्च सृजनात्मक क्षमता एवं उच्च नैतिक मूल्य होंगे, जो भारत की समृद्धि और खुशहाली के लिए निरंतन कठोर परिश्रम करेंगे।

सामाजिक भेदभावों की समाप्ति
डा0 कलाम का मानना है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में ऐसे तत्व होने चाहिए, जिससे हमारे नौजवानों के हृदय और मन में जाति, धर्म, वर्ण, लिंग और रंग के आधार पर कोई भी विभेद शेष न रहे। इस विभेद की समाप्ति का लक्ष्य हमारी शिक्षा व्यवस्था के पाठ्यक्रमों में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए, तभी हम विकसित भारत के लक्ष्य को यथेष्ट रूप में प्राप्त कर सकते हैं।
विकसित भारत की परिकल्पना : विजन 2020

'मेरे देश को एक विकसित राष्ट्र बना दो'

यह कथन भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं महान वैज्ञानिक व शिक्षक डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम का है। डा0 कलाम के जीवन का लक्ष्य है कि सन् 2020 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बने।
विकसित देश के मायनेः डा0 कलाम ने विकसित राष्ट्र के मायने को एक आम भारतीय के लिए निम्न शब्दों व्यक्त किया है–
''इसके मायने होंगे ऐसी स्थिति, जिसके आ जाने पर, हमारी अर्थव्यवस्था में जोरदार परिवर्तन होगा और वह दुनिय की सबसे ज्यादा सशक्त और लाभप्रद अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगी। उसकी सार्थकता भारत जैसे देश के लिए यह होगी कि देश के लोगों की सेहत बेहतर होगी, सबको उच्च दर्जे की शिक्षा मिलेगी, देश की सुरक्षा इतनी मजबूत हो जाएगी कि कोई मुल्क उसकी तरफ आंखें उठाने की हिम्मत नहीं कर पाएगा। कई महत्वपूर्ण और बड़े क्षेत्रों में उसकी मूल समर्थता और क्षमता उच्च कोटि की वस्तुओं का निर्माण और उत्पादन करने लायक हो जाएगी। उनका अधिकाधिक निर्यात करके देश के लोग ज्यादा से ज्यादा खुशहाल और संतुष्ट हाल में दिखाई देंगे।''

डा0 कलाम के अनुसार शिक्षा का स्वरूप
डा0 कलाम ने भारतीय शिक्षा प्रणाली के स्वरूप की व्याख्या निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त की है–
''मेरा मानना है कि हमें नैतिक व्यवस्था वाली एक ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो विज्ञान, कला, विधि, साहित्य तथा राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी रहे, हमारे महान नेताओं के अनुभव बखान करती हो। प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में बच्चों में रचनात्मकता लाने का प्रयास किया जाए।''
इस प्रकार डा0 कलाम, शिक्षा के क्षेत्र में भारत के प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करना चाहते थे और भारत को पूर्व काल की भांति विश्वमंच पर जगद्गुरू के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते थे। डा0 कलाम शिक्षा को मानव की अनिवार्य आवश्यकता मानते हैं जो मनुष्य में छिपी हुई उसकी सृजनात्मकता को बाहर निकालती है। शिक्षा भौतिक जीवन की तैयारी व आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति के साथ ही विकसित और शक्तिसम्पन्न राष्ट्र का प्रमुख तत्व है। शिक्षा के द्वारा वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास किया जाना चाहिए परन्तु उसके मूल में आध्यात्मक का सार होना चाहिए। शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे नैतिकता, रचनाशीलता, नवीनता तथा उद्यमशीलता का विकास होता हो तथा जहां प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण को प्रमुखता दी जाए तथा जो विज्ञान, कला, विधि, साहित्य तथा राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी रहे।

डा0 कलाम के सुझावों का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव
डा0 कलाम ने शैक्षिक पाठ्यक्रमों द्वारा छात्रों के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक व नैतिक विकास के साथ ही वैज्ञानिक प्रवृत्ति, राजनैतिक समझ व उद्यमशीलता की क्षमताओं के विकास पर बल दिया है। डा0 कलाम के शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा प्रणाली के परिप्रेक्ष्य पर पड़ने वाले प्रभाव को निम्न रूप में व्यक्त किया गया है–

प्राथमिक स्तर – विषयों की साधारण सामान्य जानकारी, पर्यावरण शिक्षा, नैतिक शिक्षा सृजनात्मक क्षमता का विकास।

माध्यमिक स्तर – कला विज्ञान, कृषि आधुनिक तकनीकी ज्ञान नैतिक शिक्षा व आध्यात्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम के विषयों में शामिल करना।

उच्च माध्यमिक स्तर – कला, विज्ञान, वाणिज्य, व्यवसायिक शिक्षा, कृषि शिक्षा, नैतिक शिक्षा, आसध्यात्मिक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, महान नेताओं के अनुभवों की शिक्षा, आधुनिक प्रौद्योगिकी व तकनीकी ज्ञान आदि को पाठ्यक्रम के विषयों के रूप में शामिल करना।

विश्वविद्यालय स्तर – डा0 कलाम ने विश्वविद्यालय शिक्षा के वर्तमान समय में प्रचलित पाठ्यचर्या को अनुपयुक्त माना है तथा इसे बेरोजगारी बढ़ाने वाला कहा है। उनके अनुसार विश्वविद्यालयों को रोजगारों का सृजन करने वाले पाठ्यक्रमों के संचालन को वरीयता दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रमों के विषयों के रूप में उन्होंने आधुनिक प्रौद्योगिकी शिक्षा, चिकित्स

शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, वाणिज्य शिक्षा, कृषि शिक्षा, कला शिक्षा, उद्यमकर्ता के लिए नेतृत्व क्षमता के विकास तथा नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया है।

डा0 कलाम के शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन

डा0 कलाम, ज्ञान की असीमितता में विश्वास करते हैं व ज्ञान को किसी भी सीमा में बाँधने के पक्ष में नहीं हैं। उनका मानना है कि जैसे–जैसे हमें नवीन वस्तुओं की जानकारी प्राप्त होती है हमारा अज्ञान दूर होता जाता है और इस प्रकार हमारा ज्ञान निरंतर समृद्ध होता जाता है और इसी क्रम में आगे चलने पर अंत में हमें विशुद्ध ज्ञान प्राप्त होता है इस अवस्था में व्यक्ति चेतना में संभाव्य ज्ञान के संपर्क में आता है जो कि सभी संभावित ज्ञान का 'अक्षेय स्त्रोत' है।

डा0 कलाम के शब्दों में, ''ज्ञान प्राप्त करना हमारी प्रत्येक क्षण की अनुभूति का मूलभूत लक्षण है। हमारी संवेदना, हमारी संवेदनशीलता की अनूति का बोध ज्ञान है। हमारा मनोभाव हमारी भावनात्मक अनुभूत का बोध ज्ञान है हमारा देखना ही ज्ञान है, हमारा सुनना ही ज्ञान है, अतीत, वर्तमान और भविष्य के सम्बन्ध में हमारा चिंतन ही ज्ञान है। हमारा प्रश्न पूछना भी ज्ञान है कि कोई बात हम नहीं जानते, यह भाव भी ज्ञान है हमारी मिथ्या धारणा और अधूरी जानकारी भी ज्ञान है।''

डा0 कलाम के विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण

डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के विचारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं एन.सी.ई.आर.टी के 'नेशनल कैरिकुलम फ्रेमवर्क, 2005 के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन करने एवं उन्हें वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त करने पर निम्न सुझाव परिलक्षित होते हैं –

1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली जहां पाठ्यक्रम पूरा करने के पश्चात डिग्री प्रदान करती है वहीं डा0 कलाम के अनुसार संबंधित डिग्री के स्थान पर कौशल प्रमाण पत्र दिया जाना चाहिए।
2. डा0 कलाम शिक्षा डिग्री के साथ–साथ तकनीकी कौशल विकास प्रमाण पत्र को दिये जाने को विकसित भारत की परिकल्पना से जोड़ते हैं तथा कॉलेज स्तर पर डिग्री एवं डिप्लोमा प्रमाण पत्र देने का सुझाव प्रस्तुत करते हैं।
3. डा0 कलाम के अनुसार कक्षा 9 से कक्षा 12 स्तर तक 25 प्रतिशत समय कौशल विकास कार्यक्रम के लिए आवंटित होना चाहिए।
4. डा0 कलाम द्वारा स्कूल में विज्ञान, गणित, लर्निंग कार्यक्रम को बढ़ावा दिये जाने के सुझाव को भारत सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान अन्तर्गत उप विषय राष्ट्रीय अविष्कार अभियान में शामिल किया है।

डा0 कलाम के शैक्षिक विचारों को विश्व मंच पर एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जिससे निम्न सुधारों को गति प्रदान की जा सकती है –

नवीनता, नैतिकता, उद्यमशीलता व आधुनिक प्रौद्योगिकी का ज्ञान

डा0 कलाम के शैक्षिक विचार के आधार पर वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के स्वरूप को निर्धारित किया जा सकता है। ऐसा करने पर शिक्षा प्रणाली के द्वारा व्यक्ति विशेष में रचनाशीलता, नवीनता, नैतिकता तथा उद्यमशीलता के कौशलों के साथ–साथ आधुनिक प्रौद्योगिकी ज्ञान के द्वारा शिक्षा प्रणाली द्वारा नए आयाम स्थापित किए जा सकते हैं।

भविष्य की शिक्षण प्रक्रिया का निर्धारण

विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में डा0 कलाम के वर्णित विचारों को पाठ्यक्रम में शामिल कर डा0 कलाम के उपरोक्त विचारों के आधार पर भविष्य की शिक्षण प्रक्रिया को निर्धारित कर सकते हैं।

युवा शक्ति में ऊर्जा संचार

डा0 कलामम के जीवन दर्शन से भारतीय युवा शक्ति को बड़े लक्ष्य निर्धारण, अदम्य साहस एवं चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देकर नई ऊर्जा का संचार किया जा सकता है।

शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार

शिक्षा व्यवस्था में डा0 कलाम के विचारों को लागू करके विषयों के निर्धारण में डा0 कलाम द्वारा प्रस्तुत प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा स्तर को शामिल किया जा सकता है इससे शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार होगा एवं पाठ्यक्रम समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही उच्च नैतिक गुणों का विकास करने में सक्षम होगा।

नई शिक्षा प्रणाली का सृजन

डा0 कलाम के शिक्षा के प्रतिमान के आधार पर एक नई शिक्षा प्रणाली का सृजन किया जा सकता है और उसे प्रयोग एवं व्यवहारिकता की कसौअी पर परख कर देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

1. डा0 कलाम के शिक्षा दर्शन द्वारा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का वैकल्पिक प्रतिमान विकसित किया जा सकता है।
2. डा0 कलाम के शैक्षिक विचार, वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आई विसंगतियों को उभरती हुई नवीन चुनौतियों का सामना करने में पूर्णतः सक्षम हैं। अगर भारतीय शिक्षा प्रणाली में डा0 कलाम के शैक्षिक विचारों को क्रियावित किया जाता है तो विश्व के समक्ष भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

3. डा0 कलाम द्वारा प्रस्तुत विकसित भारत की परिकल्पना, विजय 2020 में उन्होंने जिन पांच विशिष्ट क्षेत्रों का भारत के विकास के लिए उल्लेख किया है, उसमें उन्होंने शिक्षा को प्रथम स्थान दिया है। अतः डा0 कलाम भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करने के लिए शिक्षा को सर्वप्रमुख साधन मानते हैं।
4. डा0 कलाम को भारतीय युवा शक्ति पर अटूट विश्वास है, वह उन्हें भारत का सबसे मूल्यवान संसाधन मानते हैं और भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करने के लिए वह युवाओं का आह्वान करते हुए उन्हें बड़े लक्ष्य निर्धारण एवं अदम्य साहस की प्रेरणा देते हैं।
5. डा0 कलाम एक वैज्ञानिक होने के साथ–साथ एक आध्यात्मिक व मानवतावादी चिंतक भी हैं। एक प्रभावी शिक्षक, ऊर्जावान लेखक व वक्ता एवं संवेदनशील पर्यावरणविद होना, उनके जीवन का एक विशिष्ट पहलू है।
6. डा0 कलाम को प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं ज्ञान परंपरा पर गर्व है और शिक्षा के क्षेत्र में भारत के इस प्राचीन गौरव को वो पुनः प्राप्त करना चाहते थे तथा भारत को पूर्वकाल की भांति विश्व मंच पर 'जगद्गुरू' के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं।
7. डा0 कलाम ज्ञान को असीमित मानते हुए कहते हैं कि पृथ्वी पर और संभवतः पूरे ब्रह्माण्ड में मनुष्य ही एकमात्र ज्ञानी बुद्धिमानी प्राणी है। वो ज्ञान प्राप्ति के तीन महत्वपूर्ण साधन मानते हैं– मन, अनुभव और बुद्धि। और आगे व्याख्या करते हुए कहते हैं कि हमारा ज्ञान, मन द्वारा धारण की हुई वस्तु है, जिन्हें व्यक्ति अपने अनुभव द्वारा ग्रहण करता है और अंत में अपनी बुद्धि के द्वारा सही और गलत में भेद स्थापित करता हैं
8. डा0 कलाम शिक्षा को मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता मानते हुए कहते हैं कि शिक्षा मनुष्य में छिपी हुई उसकी सृजनात्मकता को बाहर निकालने एवं विकसित करने की प्रक्रिया है। तथा इस प्रक्रिया में ऐसे आदर्श नागरिकों का निर्माण होता है तो अपने जीवन में आने वाली प्रत्येक चुनौती का साहसपूर्वक मुकाबला कर सके।
9. डा0 कलाम शिक्षा का आध्यात्म के साथ समन्वय पर जोर देते हुए कहते हैं कि हमें स्वानुभूति को केन्द्रित करना होगा तथा हम सभी को अपने–अपने उच्च बौद्धिक धरातल के प्रति जागरूक बनना होगा। हम महान अतीत को भविष्य से जोड़ने वाली कड़ी हैं। हमें अपनी सुप्तावस्था में पड़ी आंतरिक ऊर्जा को प्रज्जवलित करना होगा ताकि वह हमारा मार्गदर्शन कर सके।
10. डा0 कलाम शिक्षा को भौतिक जीवन की तैयारी व आध्यात्मिक जीवन के प्राप्ति के साध के साथ ही विकसित और शक्तिसंपन्न राष्ट्र का प्रमुख तत्व मानते हैं।
11. डा0 कलाम ने भारतीय शिक्षा प्रणाली के स्वरूप की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा है कि हमारी शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जिससे व्यक्ति विशेष में नैतिकता, रचनाशीलता, नवीनता तथा उद्यमशीलता का विकास होता हो तथा जहां प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण को प्रमुखता दी जाए तथा जो विज्ञान, कला, विधि साहित्य तथा राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्रों में रहे हमारे महान नेताओं के अनुभवों की व्याख्या करती हो।
12. डा0 कलाम ने पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक व नैतिक विकास के साथ ही वैज्ञानिक प्रवृत्ति, राजनैतिक समझ व उद्यमशीलता की क्षमताओं के विकास पर बल देते हैं।
13. डा0 कलाम के अनुसार शिक्षण विधियों का शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि उचित विधि के प्रयोग के द्वारा अधिकतम अधिगम होता है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी बनती है। डा0 कलाम ने छात्रों के विभिन्न शैक्षिक स्तरों के अनुरूप शिक्षण विधियां बताई हैं।
   प्राथमिक स्तर– प्रश्नोत्तर विधि, अनुकरण विधि, करके सीखना विधि, प्रदर्शन एवं प्रयोग विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।
   माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर– समस्या समाधान विधि, निर्देशन और परामर्श विधि, प्रयोग विधि, समूह कार्य विधि, करके सीखना विधि, स्व–अवलोकन विधि के प्रयोग पर बल दिया है।
   उच्च स्तर– यहाँ डा0 कलाम, छात्र को एक स्वतंत्र शिक्षार्थी के रूप में देखना चाहते हैं, जो अपनी आवश्यकता के अनुसार आवश्यकता के अनुसार आवश्यक विधि का चुनाव कर सकता है।
14. डा0 कलाम ने अपने शैक्षिक चिंतन में शिक्षक को अत्यंत गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा प्रदान की है। डा0 कलाम ने न केवल शिक्षक को आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है वरन् उसे ज्ञान का झरोखा माना है, जिससे होकर ज्ञान विद्यार्थी तक पहुँता है। डा0 कलाम ने शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता माना है तथा छात्रों को कच्ची मिट्टी की उपमा दी है, जिसे रूप, आकार में गढ़ने का कार्य शिक्षक का है। वह शिक्षकों को यह सुझाव देते हैं कि उनका संपूर्ण जीवन छात्रों के लिए एक संदेश हो तथा वह शिक्षण कार्य को केवल व्यवसाय न मानें बल्कि उसे एक मिशन के रूप में स्वीकार करें।
15. डा0 कलाम के छात्र की संकल्पना अत्यंत निराली है। वे छात्र को धरती पर, धरती के ऊपर और धरती पर उपलब्ध सभी संसाधनों से मूल्यवान संसाधन मानते हैं। भारत को महाशक्ति के रूप में स्थापित करने का जो स्वप्न उन्होंने देखा, उसे साकार करने की संभावना उन्हें भारत की युवा शक्ति में दिखाई देती है। ?
16. डा0 कलाम, शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य संबंधों की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि उनके मध्य उच्च आत्मिक संबंध होने चाहिए। वे कहते हैं कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक और शिक्षार्थियों के मध्य संबंध वैसे ही होने चाहिए जैसे कि प्राचीन गुरूकुल व्यवस्था में थे।
17. डा0 कलाम विद्यालय को शिक्षा का पवित्र केन्द्र मानते हुए कहते हैं कि विद्यालयों में आधारभूत शैक्षिक सुविधाएं एवं उन तक पहुंच के लिए बेहतर यातायात की सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए।
18. डा0 कलाम जीवन के प्रत्येक कार्य में अनुशासन की महत्ता को स्वीकार करते हैं। शिक्षा में वो प्रभावात्मक एवं आत्मानुशासन के पक्षधर हैं। दमनात्मक अनुशासन को वे ठीक नहीं मानते।
19. डा0 कलाम ने भारत को विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में शामिल करने के लिए अपने संकल्प, विजन 2020 में शिक्षा के कुछ अन्य पक्षें का भी उल्लेख किया है, यथा रीच मिशन, साक्षरता आंदोलन, नारी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, दूरवर्ती शिक्षा आदि।

इस प्रकार डा0 कलाम का शैक्षिक चिंतन अत्यंत विस्तृत, दूरगामी और भारतीय ज्ञान परिप्रेक्ष्य से संपृक्त है जो निश्चित रूप से वर्तमान शिक्षण प्रणाली की समस्याओं तथा उभरती हुई नवीन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है तथा भारतीय शिक्षा व्यवस्था का वैकल्पिक प्रतिमान प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ सूची

1. डा0 वाई. एस. राजन एवं डा0 कलाम द्वारा लिखित पुस्तक, 2006– 'विजन 2020ः नवनिर्माण की रूपरेखा, राजपाल एंड संस, दिल्ली'
2. ाोती ि ाविन्द्रा, ार्मा संजीव (जुलाई 2007, एज्यूट्रेक) की कृति ''अब्दुल कलाम रिफलेक ांस ऑन एज्यूकेशन''
3. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम, 2007 – 'अग्नि की उड़ान' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
4. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम, 2007 – 'महाशक्ति भारत' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
5. संग अरूण तिवारी, 2006 – 'हमारे पथ प्रदर्शक, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
6. ए. शिवताणु पिल्लै, 2007 – 'मेरे सपनों का भारत', नई दिल्ली
7. भगवती (1988) शोध साहित्य शीर्षक ''एज्यूकेशनल फिलॉसफी ऑफ डा. राधाकृष्णन एंड ईट्स रेलिवेंस फॉर सोशल चेंज''
8. रामनाथन, आर. (2006) की कृति ''क्या है कलाम?''
9. अब्दुल कलाम डॉट काम पर शीर्षक ''नॉलेज मेक्स यू ग्रेट'' शीर्षक से प्रकाशित डा. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम का 3 अप्रैल, 2008 का सम्बोधन
10. कमल की कृति ''डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, रामे वरम से राष्ट्रपति भवन तक''
11. अग्रवाल जे.सी. एवं गुप्ता (2006) की कृति ''ग्रेट फिलोस्फर्स एण्ड थिंकर्स ऑन एज्यूकेशन''